



संतलगवंत साहेबजणी ६९ माहात्म्यसमर वाली सदा...

१५ फेब्रुआरी २०२२, स्वागतसभामां माहात्म्यगान
भगवान श्री स्वामिनारायण प्रागट्यस्थान, महातीर्थ छपैयाधाम, उत्तरप्रदेश

अहुत पुशी का दिन है आज. स्वामिनारायण भगवान का प्रागट्यस्थान - तीर्थों का भी तीर्थ, उनके दर्शन का सौभाग्य माननीय गवर्नर श्री परम पूज्य आनंदीबहेनके सांनिध्य में हम सबको प्राप्त हुआ. कितने भाग्यशाली है हम सब !

आज अहुत आनंद का दिन इस लिये है कि, हम सबका भाव था कि, ब्रह्मज्योति में अपने मंदिरकी मूर्तियोंकी प्राणप्रतिष्ठा हो गई, कणश स्थापित हो गये. चार साल पहलेले हम सब यहां आये थे. तब यहां जो बैठे है - हमारे बारीन्द्रभाई, योगेन्द्रभाई, शंकरभाई, गोविंदभाई, विजयकुमार, भावेश, डॉ. जितुभाई, जगतभाई, बिमल शेट, च्यंबकभाई सबने प्रार्थना कीके आपके साथ प्रागट्यस्थान में घनश्याम महाराज की मूर्ति के सामने संकल्प करना है कि, हमारे ब्रह्मज्योति के म्पस में शिबरबद्ध मंदिर बनाना है. हमने बोला कि, वहां मंदिर तो है जो हम सबको भा गया है और मूर्तियोंके साथ सबको लगाव भी हो गया है. लेकिन पतरे के शेर का मंदिर बना था इस लिये यह भक्तोने बोला कि, अमेरिकामें शिबरबद्ध मंदिर बना, लंडन में बना, बोम्बे में, सुरत में, अमदावाद, वेमार सब जगह मंदिर बनें, लेकिन हमारे अनुपम मिशनके हेड क्वार्टर मोगरी में शिबरबद्ध मंदिर नहि है. तो हम सबकी प्वाइश है कि, वहां बडा शिबरबद्ध मंदिर बने. हम सब उनके लिये समर्पित होंगे. कोई भी कामकाज हो तो हम आपके साथमें रहेंगे और प्रभु प्रसन्नता प्राप्त करेंगे.

हमने सोचा कि, यह प्रभु का प्रागट्यस्थान है, और भक्तो में प्रभु बोल रहे हैं, हम को तो प्रभु के काम करने में निमित्त बनना है तो सबने यहां संकल्प किया. और जो छम्पोसिबल टास्क था वो प्रभु कृपासे दो ही साल में मंदिर कम्पलीट हो गया. जिन्होंने बोला था वो तो समर्पित है ही, लेकिन पूरे विश्वभर में जो भक्तलोग है वह सबके समर्पित भाव से दो ही साल में अहुत बडा मंदिर बडा हो गया और कणश भी स्थापित हो गये.

कणश महोत्सव में आनंदीबहेन पधारे थे. उस समय आनंदीबहेन बोले थे कि, मुझे छपैया दर्शन करनेको जाना है, आप सब आइये. हमने सोचा कि, भगवान ही हम सबको उनके द्वारा बुला रहे है. तो दर्शन को आने के लिये हमने तय किया. आनंदीबहेन तो वयनपालक हैं, जो बोलते हैं वो करते हैं. उन्होंने बोला था कि, मैं आऊंगी, तो आज आये हैं. वो कितने कार्यरत हैं, यहां आने से पहलेले जब हम राजभवन में दो दिन ठहरें तब देखा. आम तौर पर हमको भगज पर टेन्शन रहेता है कि, हमें राजभवन में गवर्नर के वहां रहना है तो कुछ डिसिप्लिन में रहना पड़ेगा. लेकिन बहेन का ज्वन हमने देखा. गवर्नर होते हुअे भी सबके साथ इतने मिकस हो गये थे कि, हमको लगा ही नहि कि, हम सब राजभवन में



रहते हैं और गवर्नर के साथ ठिठते-बैठते हैं, भाते-पीते हैं. धतना लभकृतलभाव अडेनके जलवन में नजदीक से देअने को मलला. कृतनना सरल सादा जलवन है... लैकन कर्यरत अहुत हैं. ढाई साल से उत्तर प्रदेश में रहकर वलड्रन्स के ललये, अडेनों के ललये, डलसेअल लडके-लडकलडोंके ललये अहुत काम कर रहे हैं.

अडेनजने आकर पूरे राजलवनकी शकल अदल डाली. यह सअ देअकर लगा कल, कृतने कलअेटलव कर्य उनके ढारा हो रहे हैं. धतनी साधलनूट रहते कर्य करते हैं कल, कलसीको मालूम ली ना डे. अडेन में धतनी कर्यशकृत है, साथमें प्रलु के प्रति प्रेम है, लभकृत है. उनके साथ रहते डमें यह लभकृत का ली अलग सा दशन करने का मौका प्राप्त हुआ. धसका डमें अहुत आनंद आया.

उनके साथ अशोकलभाई और गीताअडेन ली ऐसे हैं. राजलवन में अेक कुटुंब जैसा वातावरण लगा. राजलवन में जो लोग मलले, वह लोग अताते थे के, वैसे तो अडेन डुश रहते हैं, पर आप सअ लभकृत लोगोंके साथ रहकर अडेन यह चार दनसे अहुत डुश हैं. यह दलभाता है कल, लभकृतोंके साथ लभकृत करने में लीतर से जो आनंद आता है वह लगवानके पूर्वजन्मके आत्मा होते हैं, डुड्यशाणी आत्मा होते हैं.

कंध सालों से अयोध्या मंदलर के कामकाज की मूवमेनूट चल रही थी. अडेन गवर्नर अने उसके आद डमारे डी.अे.म. नरेनूद्रलभाई और अडेनके सांनलध में अयोध्या मंदलर का आतमुदूतहुआ. और काशी वलश्वनाथ मंदलर का पूरा रलनोवेशन हो गया, परलसर अहुत अरुध्ण हो गया. यह ली अडेनके कर्यकाल में हुआ. अडेन कृतने डुड्यशाणी और प्रलुके कृतने कृपावान आत्मा है! यह दो धवेनूट को सोर्यें तो लगता है कल, लगवान अहुत राजु है. अडेनकी लीतर की लभकृत का दशन करके अहुत आनंद आया.

मुजे याद आता है, स्वामलनारायण लगवान जब प्रगट थे, तअ अलरलश रुल के टाईम पर मडाराष्ट्र, गुजरात, संध यह पूरा अेरलया वेस्टर्न प्रोवलन्स कला जाता था. उसके गवर्नर सर मालकम थे. मालकमसाडेअ को पादरीयों की ओर से, रेवन्यू डलपार्टमेनूट की ओर से, डुलीस की ओर से रलपॉर्ट मलले कल, गुजरात-सौराष्ट्र में अेक ऐसे साधु धुमते हैं जलनडोंने थोडे साल में पूरे मानव जलवन को अदल दलया है. रेवन्यू जयादा मललती है, डलसलडलन जयादा आई है, कुसंग-व्यसन कम होने लगें हैं. तअ सर मालकमने सोया कल, लारतवर्ष में डजारों साधु-संतों है, अैश्वर्य-प्रताड, रलदुधल-सलदुधल-यमूतकार उनके ढारा अहुत होते रहतें हैं. लेकन मानव को जो मानव अनाते हैं, सही रूप में उनको जलना सलभाते है वह स्वयं प्रलु है. प्रकृतल और स्वलभाव रहलत अनाने का काम प्रलु की शकृत हो तो ही शक्य है. तो सहजानंद स्वामी स्वयं प्रलु ही डोंगे. तो वो लगवान है. तो मेरा मानवलजलवन का कर्तव्य है कल, उनके दशन करके में कल्याण का अधलकारी अन जाड.



लभकृतों के साथ
लभकृत करने में
जलनको
लीतर से
आनंद आता है
वह लगवान के
पूर्व जन्म के
आत्मा होते हैं,
डुड्यशाणी
आत्मा होते हैं.



श्री स्वामिनारायण भगवान गवर्नरश्री माल्कम साहेब की प्रार्थना से संतो के साथ राजकोट पधारें. सर माल्कमने उनको तोपों की सलाभी दे कर भव्य स्वागत किया. अपनी कोठी में स्वामिनारायण भगवान की पधरामणी करवाएँ. स्वामिनारायण भगवानने उस टाईम कई भेट-सौगाद के साथ भुदने लिभी 'शिक्षापत्री' उनको भेंट दी. सर माल्कमने 'शिक्षापत्री' अपने पास रणी. और रिटायर्ड होकर जब लंडन वापस गये तब साथ में लेकर गये. उनहोंने सोया कि, मैं तो भगवान का माहात्म्य समजता हूं, पर पीछे जो जनरेशन आयेगी वह भी यह माहात्म्य समजे इसलिये उनहोंने ऑक्सफर्ड युनिवर्सिटी को भत लिभकर 'शिक्षापत्री' दी. उनहोंने लिभा कि, यह ग्रंथ छोटा लगता है, लेकिन महान पुरुषने लिभा है, वो महान पुरुष की ओर से मुझे भेंट मिला है. भविष्य में उनके विश्वव्यापी धतने शिष्यमंडल होंगे कि, इस पुस्तक के दर्शन करने के लिये लाईन लगेंगीं. तो आज ऑक्सफर्ड युनिवर्सिटी में ऑपोईन्टमेन्ट लिये बिना 'शिक्षापत्री' के दर्शन करने नहि मिलते हैं.

उस टाईम सर माल्कम गवर्नर थे, जैसा ही आज प्रसंग बना है, हमारे उत्तरप्रदेश के गवर्नरसाहब भुद छपैया स्वामिनारायण भगवान के दर्शन करने के लिये आये हैं. यह प्रसंग से मैं बहुत भुश हूं कि, भडेनने भुद कहा कि, जब से उत्तर प्रदेश के गवर्नर के रूप में मुझे आना हुआ तबसे मेरी भ्वाइशथी कि, छपैया का दर्शन करना है. यह बात बताती है कि, भडेनज कितने भडे आत्मा हैं, कितने भाव्यशाली हैं ! पूर्वजन्मके प्रभुके संबंधवालें ही हैं.

तो भडेन आज आप यहां आये हों, हम मंदिर परिसर के संतो-भक्तो और तीर्थयात्रीओ सब बहुत भुश है. हमारे संत लोग, छपैया मंदिर के संतों, धधर के सब कार्यकर्ताओं, छपैया और आसपास के गांवों के लोगों को बहुत बहुत भुशी है, सबकी ओर से हम आपका बहुत बहुत प्रेम से स्वागत करते हैं.

हमारे सब भक्तजन गुजरात से धतने भाव से दर्शन के लिये आये हैं. आचार्य महाराज, धर्मकुण और जहां स्वयं धनश्याम महाराज प्रगत हुआे जैसे महान तीर्थ में दर्शन करने का आपके साथ हम सबको मौका मिला तो हम सब धन्यभागी हैं.

तो आप हम सबको आशीर्वाद दो - आपकी भीतर में जो भक्ति है, आप गवर्नर हो फिर भी भीतर से आप में जो विनम्रता है, निर्मानीत्व है वह हम सब में जयादा बढ़ती रहे. औ यह मंदिर परिसर के विकास में बिना कहे आपकी ओर से पूरा साथ-सहकार मिलता ही रहेगा, आप हमारे साथ है यह जान के सबको बहुत भुशी और आनंद है. सबकी ओर से फिर से आपका भूभ भूभ धन्यवाद, आपका आभार. आप आशीर्वाद प्रदान करें जैसी हमारी सबकी ओर से आपको प्रार्थना !



मानव को
जो मानव बनाते हैं,
सही रूप में
उनको ज्ञान सिखाते है
वह स्वयं प्रभु है.
प्रकृति और
स्वभाव रहित
जनाने का काम प्रभु
की शक्ति हो तो ही
शक्य है.

